नं. 1

संजीव®

बुक्स

चित्रकला-XII

भारतीय कला का परिचय : भाग-2

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार)

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2026 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2027

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 360/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 360.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

  मेगा ग्राफिक्स, जयपुर

- मुद्रक :

  पंजाबी प्रेस, जयपुर

  ★★★★★★★

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

1.	पाण्डुलिपि चित्रकला की परम्परा (The Manuscript Painting Tradition)	1–15
2.	राजस्थानी चित्रकला शैली (The Rajasthani Schools of Painting)	16–71
3.	मुगलकालीन लघु चित्रकला (The Mughal School of Miniature Painting)	72–111
4.	दक्कनी चित्रकला शैली (The Deccani Schools of Painting)	112–142
5.	पहाड़ी चित्रकला शैली (The Pahari Schools of Painting)	143–181
6.	बंगाल स्कूल और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद (The Bengal School and Cultural Nationalism)	182–217
7.	आधुनिक भारतीय कला (The Modern Indian Art)	218–264
8.	भारत की जीवन्त कला परम्पराएँ (The Living Art Traditions of India)	265–291

◆◆◆

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2026

चित्रकला

(DRAWING)

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 24**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

General Instructions to the Examinees :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
   Candidate must write first his/her Roll No. on the question paper compulsorily.
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
   All the questions are compulsory.
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
   Write the answer to each question in the given answer-book only.
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
   For questions having more than one part, the answers to those parts are to be written together in continuity.
5. प्रश्न-पत्र के हिन्दी व अंग्रेजी रूपान्तर में किसी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही मानें।
   If there is any error/difference/contradiction in Hindi and English versions of the question paper, the question of Hindi version should be treated valid.
6. प्रश्न संख्या 12 से 15 में आन्तरिक विकल्प हैं।
   There are Internal choice in Q. No. 12 to 15.
7. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
   Write down the serial number of the question before attempting it.

खण्ड-अ (Section-A)

1. नीचे दिये गये बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कर, उसे उत्तर-पुस्तिका में लिखिए :
   Choose the correct answer to the given multiple choice questions write in the answer booklet :

   (i) ''कल्पसूत्र पाण्डुलिपि'' किस धर्म से सम्बन्धित है? [$^1/_2$]

   (अ) जैन (ब) बौद्ध
   (स) क्रिश्चियन (द) मुस्लिम

   "Kalpsutra Manuscript" is related to which religion?

   (A) Jain (B) Buddh
   (C) Christian (D) Muslim

   (ii) चित्र ''रामायण का युद्धकाण्ड'' किस शैली का है? [$^1/_2$]

   (अ) काँगड़ा (ब) बंगाल
   (स) मुगल (द) मेवाड़

   The painting "Yuddhkand of Ramayan" belongs to which school?

   (A) Kangra (B) Bengal
   (C) Mughal (D) Mewar

(iii) ''दरबार में जहाँगीर'' के चित्रकार थे— [1/2]

(अ) अबुल हसन और मनोहर (ब) अकबर-सलीम

(स) मीर सैयद अली-अब्द उस समद (द) दसवन्त-बसावन

"Jahangir in Darbar" was painted by—

(A) Abul Hasan and Manohar (B) Akbar-Salim

(C) Mir Sayyad Ali-Abd Us Samad (D) Dasawant-Basawan

(iv) ''पोलो खेलते हुए चाँद बीबी'' चित्र किस शैली से सम्बन्धित है? [1/2]

(अ) गुलेर-पहाड़ी (ब) जहाँगीर-मुगल

(स) बीजापुर-दक्कन (द) बीकानेर-राजस्थान

To which school does the painting "Chand Bibi Playing Polo" belong?

(A) Guler-Pahari (B) Jahangir-Mughal

(C) Bijapur-Deccan (D) Bikaner-Rajasthan

(v) चित्र 'ढाकी' हरीपुरा पोस्टर किसकी कृति है? [1/2]

(अ) जामिनी राय (ब) अमृता शेरगिल

(स) अबनीन्द्रनाथ टैगोर (द) नन्दलाल बोस

The painting 'Dhaki' Haripura poster is the work whom?

(A) Jamini Roy (B) Amrita Shergil

(C) Abanindranath Tagore (D) Nandalal Bose

(vi) 'संथाल फैमिली' के मूर्तिकार है— [1/2]

(अ) राम किंकर बैज (ब) देवी प्रसाद राय चौधरी

(स) अमरनाथ सहगल (द) जामिनी राय

Sculptor of 'Santhal Family' is—

(A) Ram Kinker Baj (B) Debi Prasad Roy Chowdhary

(C) Amarnath Sahgal (D) Jamini Roy

(vii) ''रास लीला'' वाश पेन्टिंग किसने बनाई है? [1/2]

(अ) अबनीन्द्रनाथ टैगोर (ब) अमृता शेरगिल

(स) क्षितिन्द्रनाथ मजुमदार (द) रवीन्द्रनाथ टैगोर

Who painted the wash painting–"Rasa Lila"?

(A) Abanindranath Tagore (B) Amrita Shergil

(C) Kshitindranath Majumdar (D) Ravindranath Tagore

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

Fill in the blank in the following sentences :

(i) ''अश्विन, बारहमासा'' ..... शैली का चित्र है। [1/2]

"Ashwin, Barahmasa" belongs to ..... school of painting.

(ii) ..... बनी-ठनी के चित्रकार है। [1/2]

..... is painter of Bani-Thani.

(iii) जामिनी रॉय के चित्र बंगाल की ..... कला से प्रभावित है। [1/2]

Paintings of Jamini Roy is influenced from ..... art of Bengal.

(iv) 'हल्दी ग्राइण्डर' ..... का चित्र है। [1/2]

'Haldi Grinder' is painting of ..... .

(v) 'वनश्री' मूर्तिशिल्प ..... द्वारा निर्मित है। [1/2]

'Vanshri' sculpture is built by ..... .

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर **एक** पंक्ति में लिखिए :

Answer the following very short type questions in **one** line :

(i) ''गोधुली का समय'' जयपुर 1780 में क्या चित्रित है? [1/2]
What is depicted in "The hour of Godhuli", Jaipur 1780?

(ii) चित्र ''मेडोना एण्ड चाइल्ड'' किस शैली का चित्र है? [1/2]
The painting "Madona and Child" belongs to which school?

(iii) ''दारा शिकोह की बारात'' में क्या दर्शाया गया है? [1/2]
What is shown in "The Marriage Procession of Dara Shikoh"?

(iv) बीजापुर शैली का चित्र ''योगिनी'' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। [1/2]
Write a very short note on "Yogini" of Bijapur school.

(v) ''संयोजित घोड़ा'' में क्या है? [1/2]
What is depicted in "Composite Horse"?

(vi) चित्र ''कृष्ण मक्खन चुराते हुये'' का संक्षिप्त वर्णन कीजिये। [1/2]
Shortly describe the painting "Krishna Steals Butter".

(vii) काँगड़ा चित्र शैली क्यों प्रसिद्ध है? [1/2]
Why is Kangra painting school famous?

(viii) ''राधिका'' वाश चित्र का संक्षिप्त वर्णन कीजिये। [1/2]
Shortly describe the wash painting "Radhika".

(ix) चित्र ''फेयरी टेल्स फ्रोम पूर्वपल्ली'' में क्या चित्र है? [1/2]
What is painted in "Fairy Tales from Purvapalli"?

(x) ''फड़'' चित्रण क्या है? [1/2]
What is "Phad" painting?

खण्ड-ब (Section-B)

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम **40** शब्दों में लिखिए :

Write the answer of the following short questions in maximum **40** words :

4. कल्पसूत्र में क्या वर्णित है? [3/4]
What is described in Kalpsutra?

5. सचित्र पाण्डुलिपि और पाण्डुलिपि परम्परा क्या है? [3/4]
What is painted manuscripts and tradition manuscripts?

6. मुगल कालीन पशु-पक्षी चित्रण पर एक पेराग्राफ लिखिये। [3/4]
Write a paragraph on Animal-Bird painting in Mughal period.

7. जहाँगीर स्वयं एक अच्छा कला-प्रेमी था, स्पष्ट कीजिये। [3/4]
Jahangir himself was a good art lover, clarify.

8. चित्र ''राग हिण्डोला की रागिनी पथमासिका'' में क्या दर्शाया है? [3/4]
What is depicted in the painting "Ragini Pathamasika of Raga Hindola"?

9. दक्कनी उपशैलियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिये। [3/4]
Make a brief description of the Deccani sub school.

10. अमूर्त क्या है? आप इससे क्या समझते हैं? [$^3/_4$]

What is abstraction? What do you understand by it?

11. बिनोद बिहारी मुखर्जी के चित्रों पर प्रकाश डालिये। [$^3/_4$]

Highlight the paintings by Benode Behari Mukharjee.

खण्ड-स (Section-C)

निम्नलिखित दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखिए :

Write the answer of the following long answer type questions approx. in **150** words :

12. काँगड़ा शैली की विशेषताओं पर एक लेख लिखिये। [$1^1/_2$]

Write a note on the characteristics of Kangra school.

अथवा/OR

बसोहली शैली की आकृतियों और रंगों पर प्रकाश डालिये।

Highlight to figures and colours of Basohli school.

13. किसी एक वाश चित्रकार और उनके चित्रों पर एक लेख लिखिये। [$1^1/_2$]

Write a note on any one wash artist and his paintings.

अथवा/OR

स्थापित कीजिये कि नन्दलाल बोस एक राष्ट्रवादी चित्रकार थे।

Stablish that Nandalal Bose was a nationalist artist.

खण्ड-द (Section-D)

निम्नलिखित निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में लिखिए :

Write the answer of the following essay type questions approx. in **250** words :

14. राजस्थानी शैली की मुख्य विशेषताओं को अभिव्यक्त कीजिये। [2]

Express the salient features of Rajasthani school.

अथवा/OR

मेवाड़ शैली का सविस्तार वर्णन कीजिये।

Describe in detail the Mewar school.

15. भारतीय जीवन्त कला परम्परा को परिभाषित कीजिये। [2]

Define the living art tradition of India.

अथवा/OR

स्पष्ट कीजिये कि लोकचित्र एक सरलीकृत संरचना है।

Clarify that folk paintings are simplified formation.

चित्रकला–कक्षा 12

1. पांडुलिपि चित्रकला की परम्परा
(The Manuscript Painting Tradition)

पाठ परिचय

विष्णुधर्मोत्तर पुराण का 'चित्रसूत्र' अध्याय भारतीय चित्रकला का स्त्रोत–

पाँचवीं शताब्दी में रचित 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' के तृतीय खण्ड में चित्रसूत्र नामक एक अध्याय है, जिसे सामान्यत: भारतीय कला और विशेषत: चित्रकला की स्रोत पुस्तक के रूप में स्वीकार किया गया है। यह अध्याय आकृति बनाने की कला से संबंधित है जिसे 'प्रतिमा लक्षण' कहते हैं, जो कि चित्रकला के धर्मसूत्र हैं। इसमें मानव आकृति की त्रि-आयामिता (विस्तार, लम्बाई, चौड़ाई) की संरचना, परिप्रेक्ष्य, तकनीक, उपकरण, सामग्री, सतह (दीवार) तथा धारणा का उल्लेख किया गया है। यह चित्रण के विभिन्न अंगों, जैसे–रूपभेद (roopbheda) या बाहरी स्वरूप, प्रमाण या परिमाप; अनुपात और संरचना; भाव या अभिव्यंजना; लावण्य योजना या सौन्दर्य रचना; सादृश्यता या समरूपता और वर्णिकाभंग या ब्रुश और रंगों के उपयोग की बहुत विस्तार से उदाहरणों सहित व्याख्या करता है। इनमें प्रत्येक के अनेक उप खण्ड हैं। कई शताब्दियों से इन धर्मसूत्रों को कलाकारों द्वारा पढ़ा, समझा और अनुसरण किया जाता रहा है। इस प्रकार से यह भारत में चित्रकला की सभी भारतीय शैलियों एवं चित्रशालाओं का आधार बना रहा है।

लघु चित्रकारी–

मध्यकाल की चित्रकला को उनके अपेक्षाकृत छोटे आकार के कारण लघु चित्रकारी के नाम से जाना गया। अपने छोटे आकार के कारण इन लघु चित्रों को हाथ में लेकर निकट से अवलोकन किया जाता था। कला संरक्षकों के महलों या राजदरबारों की दीवारों को भित्ति चित्रों से सजाया जाता था। इसलिए इन लघु चित्रों का उद्देश्य कभी भी दीवारों पर प्रदर्शित करना नहीं होता था।

पांडुलिपि चित्रकला–

चित्रकला का एक बड़ा वर्ग पांडुलिपि चित्रण के नाम से जाना जाता है जिनमें महाकाव्यों के काव्य छंदों और विभिन्न विहित, साहित्यिक, संगीत ग्रंथों (पांडुलिपियों) का चित्रण किया गया है। चित्रपट के शीर्ष भाग पर हस्तलिखित छंद को स्पष्ट रूप से सीमांकित आयताकार स्थानों में लिखा जाता था। कभी-कभी विषयवस्तु को लेखचित्र के मुख्य पृष्ठ पर न लिखकर पीछे की तरफ लिखा जाता था।

पांडुलिपि चित्रण को व्यवस्थित रूप से विषयवस्तु के अनुसार विभिन्न भागों में रचित किया गया था (प्रत्येक समूह में विभिन्न प्रकार के बंधनमुक्त कई चित्र या ग्रन्थ समाहित होते थे)। चित्र के प्रत्येक पृष्ठ का अपना एक संगत मूल-पाठ (Text) है जिसे या तो चित्र के ऊपरी हिस्से में सीमांकित स्थान पर या इसके पृष्ठ में उकेरा गया था। इस प्रकार से प्रत्येक समूह में रामायण या भागवत पुराण, या महाभारत, या गीत गोविन्द, रागमाला इत्यादि के चित्रों का संकलन होगा। प्रत्येक समूह को कपड़े के एक टुकड़े में लपेटकर राजा या संरक्षक के पुस्तकालय में एक पोटली के रूप में संग्रहित किया जाता था।

कॉलफॅन (पुष्पिका) पृष्ठ (Colophon Page)–

संग्रह का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्ण-पृष्ठ कॉलफॅन (पुष्पिका) का पृष्ठ होता है, जिस पर संरक्षक के नाम की जानकारी, कलाकार या लेखक, संगठन या कार्य के पूर्ण होने की तिथि और संग्रह बनाने का स्थान एवं अन्य महत्त्वपूर्ण विवरण लिखा जाता था।

यद्यपि समय के प्रकोपों के कारण कॉलफॅन (पुष्पिका) पृष्ठ प्राय: गुम या नष्ट हो गए हैं और अपने उद्यम या संगठन के कहने पर कला-विद्वानों ने इनका विवरण इनकी विशेषता के आधार पर किया है।

चित्रकला किसी भी तरह की आपदाओं, जैसे–आग, नमी और अन्य आपदाओं के प्रति अतिसंवेदनशील होती है। फलतः लघु चित्रों को कला का बहुमूल्य एवं कीमती रूप माना गया है एवं इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना भी सुगम था। इन चित्रों को प्रायः राजकुमारियों को उनके विवाह के समय भेंट के रूप में उपहार में दिया जाता था। इनका राजाओं एवं दरबारियों के मध्य उपहार और कृतज्ञता के रूप में भी आदान–प्रदान बड़े व्यापक और व्यावहारिक रूप में किया जाता था और सुदूर स्थानों पर इनका व्यापार किया जाता था। ये चित्र तीर्थयात्रियों, साधु–सन्तों, साहसिक खोजकर्ता, व्यापारियों और पेशेवर कथावाचक के साथ सुदूरवर्ती क्षेत्रों में ले जाए जाते थे। इस प्रकार, उदाहरणार्थ, मेवाड़ के चित्रों का संग्रह बूँदी के राजा के यहाँ या उसी प्रकार से बूँदी के चित्र मेवाड़ के राजा के यहाँ मिल सकते थे।

चित्रकलाओं के इतिहास का पुनर्निर्माण (Reconstructing the History of Paintings)–

चित्रकलाओं के इतिहास का पुनर्निर्माण एक अभूतपूर्व कार्य है। दिनांकित की तुलना में अदिनांकित कलाकृतियाँ कम हैं। अगर इन सभी को क्रमानुसार व्यवस्थित किया जाए तो इनके बीच कुछ खाली स्थान रह जाते हैं, जहाँ पर किसी के भी द्वारा चित्रण के विकास या गतिविधि का अंदाज लगाया जा सकता है। स्थिति की जटिलता तब अधिक बढ़ जाती है, जब ये बिखरे पृष्ठ अपने मूल भाग का हिस्सा न रहकर विभिन्न संग्रहालयों और निजी संग्रहों में बिखर गए, जो इधर–उधर समय–समय पर देखने को मिलते हैं। ये परिभाषित समय को चुनौती देते हैं और विद्वानों को पुनः कालक्रम में संशोधन करने और उसे पुनर्परिभाषित करने के लिए विवश करते हैं। इस प्रकार अदिनांकित चित्रकलाओं के समूहों को उनकी शैली के आधार पर और अन्य परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता रहा है।

पश्चिमी भारतीय चित्रकला शैली (Western Indian School of Painting)

चित्रकला की जो शैली भारत के पश्चिमी भाग में बड़े रूप में फली–फूली, उसे पश्चिमी भारतीय चित्रकला के नाम से जाना जाता है। इस शैली का प्रमुख केन्द्र गुजरात है, इसमें अन्य केन्द्रों के रूप में राजस्थान का दक्षिणी भाग और मध्य भारत का पश्चिमी भाग भी सम्मिलित है। गुजरात में अनेक प्रमुख बन्दरगाहों के होने के कारण इस क्षेत्र से गुजरने वाले व्यावसायिक मार्गों का एक जाल है जिसमें वहाँ के स्थानीय सामन्त, सौदागर और व्यापारी व्यापार से अर्जित अपनी धन–सम्पदा और समृद्धि के कारण कला के सशक्त संरक्षक बन गये थे।

जैन चित्रकला–मुख्य रूप से जैन–समुदाय के व्यापारी वर्ग ने जैन धर्म के विषयों को संरक्षित किया। जैन विषयों और पांडुलिपियों पर आधारित पश्चिम भारतीय शैली का यह भाग जैन चित्रकला के नाम से जाना जाता है।

जैन चित्रों को शास्त्र दान की परंपरा से जैन शैली के विकास को और प्रोत्साहन मिला क्योंकि इस समुदाय में प्रचलित शास्त्रदान (पुस्तकों को दान देना) की अवधारणा ने इसका समर्थन किया, जहाँ सचित्र पांडुलिपि को मठों की लाइब्रेरी, जिसे भण्डार कहा जाता था, में दान देने के कार्य को एक परोपकार, सदाचार और धार्मिक कृत्य के भाव के रूप में महिमामंडित किया जाता था।

जैन परम्परा के निम्नलिखित प्रमुख ग्रन्थ हैं जिनमें जैन शैली के चित्र चित्रित किये गये हैं–

(1) कल्पसूत्र (Kalpasutra)–जैन परम्परा में कल्पसूत्र को सर्वाधिक लोकप्रिय चित्र–ग्रंथ माना गया है। इसके एक भाग में 24 तीर्थंकरों के जन्म से लेकर निर्वाण तक की विविध घटनाओं को गाते हुए बताया गया है। जो कि कलाकारों को उनके जीवन चरित्र को चित्रित करने हेतु सामग्री उपलब्ध करता है। कल्पसूत्र के अधिकांश भाग में तीर्थंकरों के जीवन और उनके द्वारा नेतृत्व की गई व उनके इर्द–गिर्द घटी पाँच प्रमुख घटनाओं को विस्तृत रूप में बताया गया है, वे हैं–गर्भाधान, जन्म, गृहत्याग, ज्ञान प्राप्ति व प्रथम उपदेश और महानिर्वाण।

(2) कालकाचार्यकथा (Kalakacharyakatha)–अन्य दूसरे लोकप्रिय चित्रित–ग्रन्थों में प्रमुख हैं–कालकाचार्यकथा और संग्राहिणी सूत्र। कालकाचार्यकथा में आचार्य कालक की कथा का वर्णन है। जिसमें कालक अपनी अपहृत बहन जो कि एक जैन साध्वी है, को एक दुष्ट राजा से बचाने के अभियान पर हैं। यह कालक की

विभिन्न रोमांचपूर्ण यात्रा और साहसी घटनाओं के बारे में बताता है, जैसे–अपनी लापता बहन का पता लगाने हेतु जमीन का शुद्धिकरण करना, अपनी जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करना, अन्य राजाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए अन्ततः दुष्ट राजा से युद्ध करना।

(3) उत्तराध्ययन सूत्र (Uttaradhyayana Sutra)–उत्तराध्ययन सूत्र में महावीर स्वामी की शिक्षाएँ लिखी हुई हैं जहाँ भिक्षुओं के आचार संहिता का पालन करने का वर्णन किया गया है।

(4) संग्राहिणी सूत्र (Sangrahini Sutra)–संग्राहिणी सूत्र एक ब्रह्माण्ड सम्बन्धी ग्रंथ है जिसे 12वीं शताब्दी में लिखा गया था। इसमें ब्रह्माण्ड की संरचना एवं अन्तरिक्ष के बारे में अवधारणाएँ विद्यमान हैं।

जैनियों के द्वारा इन सभी ग्रंथों की अनेक प्रतियाँ लिखवाई गईं। इनमें या तो कम या बहुत अधिक चित्र मिलते हैं। एक विशिष्ट चित्र या पृष्ठ पोथी को लेखन और चित्रण के लिए विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता था।

पटलिस (Patlis)—पांडुलिपि या पोथी चित्र के पृष्ठों को एक साथ जोड़ने के लिए ऊपर और नीचे पटलिस नामक लकड़ी के आवरण का उपयोग किया जाता था और जोड़ने के लिए एक छोटा सा छेद बनाया जाता था जिससे उसे एक डोर के द्वारा बांध दिया जाता था ताकि वे संरक्षित रहें।

ताड़ की पत्तियों पर चित्रित जैन चित्र–प्रारम्भिक जैन चित्रकला कागज के आगमन से पूर्व ताड़ की पत्तियों पर पारम्परिक रूप से बनाई जाती थी। कागज 14वीं शताब्दी में आया था और भारत के पश्चिमी क्षेत्र से प्राप्त सबसे पुरानी ताड़ के पत्तों की पांडुलिपि 11वीं शताब्दी की है। ताड़ की पत्तियों को चित्र बनाने से पूर्व ठीक प्रकार से तैयार किया जाता था एवं एक तीखी सुलेख लिखने वाली लेखनी से उन पर कुशलता के साथ शब्दों को लिखा जाता था।

ताड़ की पत्तियों के संकरे एवं छोटे स्थान के कारण आरंभ में चित्रण मात्र 'पटलिस' तक ही सीमित था जिन पर चमकदार रंगों में देवी और देवताओं के चित्र बनाये जाते थे और जैन आचार्यों के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का चित्रण किया जाता था।

जैन चित्र शैली की विभिन्न विशेषताएँ–जैन चित्रकला में विशेष प्रकार की सरलीकृत एवं योजनाबद्ध भाषा का विकास हुआ। प्रायः चित्रों में विभिन्न प्रकार की घटनाओं को समाहित करने के लिए चित्रपटल को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया। चित्रों में चमकीले रंग और कपड़े के अलंकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संयोजन में पतली रेखाएँ प्रबल प्रभुत्व लिए हुए हैं एवं चेहरे को त्रिआयामी बनाने के प्रयास में एक अतिरिक्त आँख आगे की ओर जोड़ी गई है। जहाँ पर ये चित्र बनाए गए हैं वहाँ की स्थापत्य कला के तत्व, जैसे–सल्तनत काल के मकबरे और ऊँचे गुम्बद आदि गुजरात, माण्डु, जौनपुर, पाटन के साथ अन्य क्षेत्रों में सुल्तानों की राजनीतिक उपस्थिति का संकेत देते हैं। वस्त्र के शामियानों और पर्दों, मेज, कुर्सी, वेशभूषा, उपयोगी वस्तुओं आदि पर टंगे चित्रों की स्वदेशी विशेषता और स्थानीय सांस्कृतिक जीवन शैली के प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। भू-भाग की विशेषताएँ केवल सांकेतिक हैं और सामान्यतः इन्हें विस्तृत रूप में नहीं दिखाया गया है। जैन चित्रकला का लगभग 1350-1450 का सौ वर्षों का काल सर्वाधिक रचनात्मक काल माना जाता है। चित्रों की संरचना में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का अनुभव किया जा सकता है, जहाँ प्रबल रूप से देवी-देवताओं के साथ आकर्षक रूप से चित्रित किए गए भू-दृश्य, नृत्य करती मानव आकृतियाँ और विभिन्न वाद्य यंत्रों को बजाते हुए संगीतकारों का चित्रण मुख्य चित्र के हाशिये पर किया गया है।

इन चित्रों में अत्यधिक रूप से स्वर्ण का उपयोग करते हुए मूल्यवान नीले रंग के पत्थर (लाजवर्त) का प्रयोग किया गया है, जो अपने संरक्षकों की संपन्नता तथा सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाता है।

इन चित्रों में धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त तीर्थपट, मण्डल और गैर-धार्मिक कहानियों को भी जैन समुदाय के लिए चित्रित किया जाता था।

व्यापारियों के अतिरिक्त सामन्तों के मध्य चित्र परम्परा–जैन चित्रों के अतिरिक्त इनका निर्माण या संरक्षण धनी व्यापारियों एवं समर्पित भक्तों द्वारा करवाया जाता था। 15वीं और 16वीं शताब्दियों के उत्तरार्द्ध के दौरान सामन्तों, जमींदारों, धनी नागरिकों और ऐसे अन्य लोगों के मध्य चित्रों की एक समानान्तर परम्परा भी विद्यमान थी। जिसने धर्मनिरपेक्ष, धार्मिक तथा साहित्यिक विषयवस्तुओं पर बने चित्रण को अपने आवरण में लपेटा था। यह चित्रकला स्वदेशी परम्परा का प्रतिनिधित्व करती है जिसका निर्माण राजस्थान के राजदरबार की शैलियों और मुगलों के प्रभाव के आने से पहले हुआ था।